SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI
Monthly Newsletter

जून 2026

“सीख, सहयोग और संरचना
एक मजबूत नींव का महीना”

सपनों की नई उड़ान:
ग्रामीण छत्तीसगढ़ के 250 गाँवों में पहुँची STEM @ Your Doorstep की रोशनी

ग्रामीण अंचल के जिन कमरों में कभी विज्ञान और गणित के नाम से डर का सन्नाटा पसर जाता था, आज वहीं से नए प्रयोगों की गूंज और बच्चों की खिलखिलाहट सुनाई दे रही है। ब्लॉक बोर्ड की सीमाओं को लांघकर विज्ञान अब गाँव की चौपालों, सामुदायिक भवनों और 'सृजन लर्निंग रिसोर्स सेंटर्स' (LRC) के दरवाजों तक पहुँच चुका है। 'संकल्प एक प्रयास सोसाइटी' द्वारा संचालित “STEM @ Your Doorstep” पहल ने अपने नए और अधिक सशक्त के साथ वर्ष 2026–27 में ग्रामीण शिक्षा व्यवस्था में एक क्रांतिकारी परिवर्तन की नींव रख दी है।

बीते सत्र की सफलता पर रखी नई उम्मीदों की नींव
वर्ष 2025–26 के दौरान इस पहल ने दुर्ग, बालोद, बेमेतरा, राजनांदगांव और धमतरी के ग्रामीण इलाकों में 2,000 से अधिक विद्यार्थियों तक अपनी सीधी पहुँच बनाई थी। इसके असरदार नतीजों का ही परिणाम था कि विद्यार्थियों के गणित और विज्ञान के प्राप्तांकों व समझ में 60% से 75% तक का उल्लेखनीय सुधार दर्ज किया गया।

केवल परीक्षा के अंक ही नहीं बदले, बल्कि गाँव की बेटियों का आत्मविश्वास भी मुस्कुरा उठा। कक्षा में बालिकाओं की बढ़ती भागीदारी ने यह साबित कर दिया कि यदि अवसर मिले तो ग्रामीण बेटियाँ भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने में किसी से पीछे नहीं हैं। इसी सफलता को आगे बढ़ाते हुए अब इस कार्यक्रम का विस्तार 4,000+ विद्यार्थियों तक करने का लक्ष्य तय किया गया है।

चुनौतियों का समाधान: रटने की प्रथा पर चोट
ग्रामीण क्षेत्रों में कक्षा 6 से 8 के स्तर पर बुनियादी अवधारणाओं (Foundational Concepts) का स्पष्ट न होना एक बड़ी समस्या रही है। जब यही बच्चे 9वीं और 10वीं में पहुँचते हैं, तो बीजगणित, त्रिकोणमिति, भौतिकी और रसायन विज्ञान जैसे विषय उनके लिए डर का पर्याय बन जाते हैं। इसका नतीजा बोर्ड परीक्षा का तनाव, गिरता आत्मविश्वास और अंततः पढ़ाई छोड़ने (Dropout) के रूप में सामने आता है।

STEM @ Your Doorstep का सीधा प्रहार इसी जड़ पर है:

रटने के बजाय तर्क: पारंपरिक रटंन प्रणाली की जगह अब तर्क-आधारित शिक्षण और वास्तविक जीवन से जुड़े उदाहरणों को प्राथमिकता दी जा रही है।

परीक्षा के भय से मुक्ति: कक्षा 10वीं के छात्रों को योजनाबद्ध तरीके से प्री और पोस्ट-टेस्ट के माध्यम से बोर्ड परीक्षा के लिए मानसिक रूप से तैयार किया जा रहा है।

संसाधनों की भरपाई: जहाँ ग्रामीण स्कूलों में आधुनिक लैब और डिजिटल टूल्स का अभाव है, वहाँ यह पहल पिको प्रोजेक्टर (Pico Projector)और TLM (Teaching Learning Material) किट्स के ज़रिए प्रयोग-आधारित शिक्षण पहुँचा रही है।

50 सृजन फेलो और 250 गाँवों का 'क्लस्टर मॉडल'
इस पूरे अभियान को धरातल पर उतारने के लिए एक मजबूत संगठनात्मक ढांचा तैयार किया गया है। कार्यक्रम का कार्यान्वयन क्लस्टर-आधारित मॉडल पर हो रहा है, जहाँ 50 प्रशिक्षित 'सृजन ट्रेनी फेलो' और 'एबीजी फेलो' (ABG Fellows) की टीम कमान संभाल रही है।

दुर्ग	26	130
बालोद	06	30
बेमेतरा	06	30
राजनांदगांव	06	30
धमतरी	06	30
कुल (5 जिले)	50 फेलो	250 गाँव

प्रत्येक केंद्र पर सप्ताह में दो दिन 9 वीं और 10 वीं के बच्चों के लिए विशेष 1-1 घंटे के STEM वर्कशॉप आयोजित किए जा रहे हैं। इसमें 45 मिनट विज्ञान की प्रयोगात्मक अवधारणाओं के लिए और 45 मिनट गणित की तार्किक बारीकियों के लिए समर्पित हैं।

लक्ष्य: ड्रॉपआउट में 30% कमी और JEE/NEET का सपना

'STEM @ Your Doorstep का लक्ष्य केवल पास होने तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण प्रतिभाओं को देश की मुख्यधारा से जोड़ना है:

1. सीखने के स्तर में 80% सुधार

जिसे नियमित मासिक प्री और पोस्ट-असेसमेंट टूल्स से मापा जाएगा।

2. ड्रॉपआउट दर में 30% की कमी:

विशेषकर 10वीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ने वाले छात्रों को थामना।

3. 50% छात्रों में करियर जागरूकता:

गाँव के बच्चों को यह बताना कि 10वीं के बाद उनके सामने इंजीनियरिंग (JEE), मेडिकल (NEET), पॉलिटेक्निक और तकनीकी शिक्षा के कौन-कौन से रास्ते खुले हैं।

बदलाव की एक नई सुबह

'STEM @ Your Doorstep' केवल एक शैक्षणिक परियोजना नहीं है; यह ग्रामीण भारत की सोच में बदलाव का एक आंदोलन है। यह पहल साबित कर रही है कि अगर सही संसाधन, बेहतर मार्गदर्शन और प्रयोगात्मक शिक्षण का अवसर मिले, तो गाँव की पगडंडियों से निकलकर भी वैज्ञानिक, इंजीनियर और शोधकर्ता देश के पटल पर अपनी चमक बिखेर सकते हैं।

250 गाँवों में जल रही STEM शिक्षा की यह मशाल आने वाले कल में ग्रामीण छत्तीसगढ़ की एक नई, सशक्त और आत्मनिर्भर तस्वीर पेश करने के लिए तैयार है।

संकल्प एक प्रयास:

बेहतर शिक्षा और उज्ज्वल भविष्य के लिए तैयार हुई नई कार्ययोजना

शिक्षा और सामाजिक विकास के क्षेत्र में कार्यरत संस्था 'संकल्प एक प्रयास' (SEP) द्वारा अपने कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी, पारदर्शी और परिणाम-उन्मुख बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया गया है। संस्था के SEP कार्यालय में 10 जून 2026 को दोपहर 12:00 बजे मासिक कार्यकारिणी समिति की एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता संस्था के अध्यक्ष श्री अब्दुल वसीम ने की।

मई माह की प्रगति की समीक्षा और भावी रणनीतियों पर मंथन

बैठक की शुरुआत मई माह में किए गए कार्यों की समग्र समीक्षा के साथ हुई। इस दौरान संस्था द्वारा 'आदर्श बाल ग्राम' (ABG) कार्यक्रम के अंतर्गत शैक्षणिक सामग्री के निर्माण, मानक कार्यप्रणाली (SOP) के निर्धारण और प्रशिक्षण मॉडलों को व्यवस्थित करने पर विशेष रूप से संतोष व्यक्त किया गया।

बैठक में उपस्थित सदस्यों ने इस बात पर जोर दिया कि संस्था के प्रत्येक कार्यक्रम का सीधा लाभ बच्चों तक पहुँचे और उसके परिणाम स्पष्ट रूप से दिखाई दें।

विभिन्न शैक्षणिक व सामाजिक कार्यक्रमों के लिए ठोस फैसले

बैठक के दौरान बच्चों के सर्वांगीण विकास से जुड़े कई प्रमुख विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई और महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए:

सीख' (SEEKH) कार्यक्रम: कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों के सीखने के स्तर (उच्च, मध्यम और निम्न) के अनुसार विशेष हिंदी पाठ योजनाएं और शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) तैयार करने की सहमति बनी। इसका उद्देश्य गतिविधि-आधारित शिक्षण को बढ़ावा देना है।

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी (SRIJAN एवं MSSP): नवोदय और NMMS (राष्ट्रीय साधन-सह-योग्यता छात्रवृत्ति) जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की बेहतर तैयारी के लिए तर्कशक्ति, गणित और भाषा विषय की व्यवस्थित सामग्री और अभ्यास सेट विकसित किए गए हैं।

'गरिमा' और डिजिटल शिक्षा: 'गरिमा' कार्यक्रम के साथ-साथ कंप्यूटर शिक्षा, ई-उड़ान, डिजिटल लर्निंग, एसटीईएम (STEM), विज्ञान मेला, एलआरसी और अभिभावक-शिक्षक बैठक (PTM) जैसे कार्यक्रमों के सुचारू संचालन के लिए मानक कार्यप्रणाली (SOP) और प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किए गए हैं।

निगरानी और मूल्यांकन व्यवस्था (ABG Indicator Mapping): संस्था के सभी कार्यक्रमों को निर्धारित 'आदर्श बाल ग्राम' संकेतकों से जोड़ा गया है, जिससे प्रत्येक गतिविधि के प्रभाव और परिणामों का सही मूल्यांकन किया जा सके।

क्षमता विकास पर रहेगा विशेष जोर

आगामी योजना पर चर्चा करते हुए निर्णय लिया गया कि संस्था के शिक्षकों और जमीनी स्तर पर कार्यरत टीमों के क्षमता विकास के लिए जल्द ही विशेष प्रशिक्षण और उन्मुखीकरण (Orientation) सत्र आयोजित किए जाएंगे।

संस्था के प्रमुख पदाधिकारियों की रही गरिमामयी उपस्थिति

बैठक में कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के साथ-साथ 'सीख', 'सृजन' और 'गरिमा' कार्यक्रमों के कार्यक्रम प्रबंधकों और परियोजना समन्वयकों ने विशेष आमंत्रित सदस्यों के रूप में भाग लिया।

इस अवसर पर संस्था के उपाध्यक्ष श्री वी. एस. पांडे, महासचिव श्री परिमल सिन्हा, कोषाध्यक्ष श्री रिनु वी. कोशी, संयुक्त महासचिव श्री एस. के. समाल तथा कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती भावना नायक एवं श्री अभिषेक कुमार प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

बैठक के अंत में गुणवत्तापूर्ण कार्यान्वयन, समयबद्ध प्रशिक्षण और निरंतर दस्तावेजीकरण के संकल्प के साथ अध्यक्ष महोदय द्वारा सभी सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापन किया गया, जिसके साथ ही बैठक का समापन हुआ।

डिजिटल क्रांति की राह पर शिक्षा:

'ई-उड़ान' और आधुनिक संसाधनों से सँवर रहा बच्चों का भविष्य

नया सत्र, नई उम्मीदें: शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक और नवाचार का एक नया अध्याय जुड़ने जा रहा है। बच्चों की पढ़ाई को और अधिक रोचक, सुलभ और प्रभावकारी बनाने के लिए 'ई-उड़ान' परियोजनाकी तैयारियाँ पूर्ण कर ली गई हैं। इस पहल का मुख्य उद्देश्य डिजिटल माध्यमों के ज़रिए बच्चों के सीखने की क्षमता को बढ़ाना और उन्हें आधुनिक शिक्षा से जोड़ना है।

क्षमता विकास पर रहेगा विशेष जोर

'ई-उड़ान' परियोजना के तहत Standard Operating Procedure (SOP) का गहराई से अध्ययन कर योजना की बारीकियों और इसके दूरगामी परिणामों की रूपरेखा तैयार कर ली गई है।

शुरुआती चरण में कक्षा 6 और कक्षा 8 के गणित विषय पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। पाठ्यक्रम पर आधारित गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री का संकलन पूरा हो चुका है। अब गणित के कठिन समझे जाने वाले पाठों को बच्चों के लिए आसान बनाने हेतु एनिमेटेड वीडियो और डिजिटल संसाधनों को जोड़ा गया है। पूरे कंटेंट को दैनिक 'लेसन प्लान' (Lesson Plan) के साथ इस तरह व्यवस्थित किया गया है कि इसे ऑनलाइन और ऑफलाइन—दोनों ही माध्यमों से प्रभावी ढंग से पढ़ाया जा सके।

हर विद्यालय तक पहुँचेगा डिजिटल लर्निंग सेंटर का लाभ

डिजिटल शिक्षा के इस नए ढांचे को ज़मीन पर उतारने के लिए शिक्षण सामग्री के संग्रह और वर्गीकरण के साथ-साथ बुनियादी ढाँचे का भी बारीकी से मूल्यांकन किया गया है। विद्यालयों में मौजूद LED TV, प्रोजेक्टर्स (Projector) और पीको प्रोजेक्टर्स (Pico Projector) की वर्तमान स्थिति का आकलन कर लिया गया है।

उपलब्ध बजट को ध्यान में रखते हुए एक प्रभावी संचालन योजना बनाई गई है। इसके साथ ही, विद्यालयों और स्थानीय समुदाय के स्तर पर 'डिजिटल लर्निंग सेंटर' स्थापित करने और उनके सुचारू संचालन के लिए आवश्यक विभागीय अनुमतियों की प्रक्रिया पर भी तेज़ी से काम चल रहा है।

आगामी शैक्षणिक सत्र में 'ई-उड़ान' परियोजना के लागू होने से न केवल कक्षाओं का माहौल बदलेगा, बल्कि डिजिटल संसाधनों के स्मार्ट उपयोग से ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के बच्चों के लिए शिक्षा अधिक आकर्षक और व्यावहारिक बन सकेगी।

ग्रामीण बच्चों के समग्र विकास को नई दिशा:
'सीख' मॉडल और ABG इंडिकेटर्स से सज रहा है आदर्श बाल ग्राम

ग्रामीण अंचल के बच्चों को न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से जोड़ना, बल्कि उनके मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक और व्यावहारिक विकास को एक नया आयाम देना—इसी सोच के साथ शिक्षा केंद्रों में 'होलिस्टिक डेवलपमेंट' (समग्र विकास) की गतिविधियों को केंद्र में रखकर कार्य शुरू किया गया है।

हाल ही में आयोजित प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से 'आदर्श बाल ग्राम' (ABG) की अवधारणा और इसके प्रमुख इंडिकेटर्स (सूचकांकों) की गहन समझ बनाई गई। इसका मुख्य ध्येय यह सुनिश्चित करना है कि गांव के प्रत्येक बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए चलाई जा रही सभी योजनाओं और गतिविधियों (Interventions) को ABG इंडिकेटर्स के अनुरूप ही संचालित किया जाए।

होलिस्टिक डेवलपमेंट: शिक्षा सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं

इस पूरे अभियान में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी 'SEEKH – Holistic Development' (सीख - समग्र विकास) को बनाया गया है। साथी फेलोज़ के लिए आयोजित विशेष प्रशिक्षण सत्र में यह बात प्रमुखता से उभरी कि बच्चों का विकास केवल किताबों के पन्ने पलटने तक सीमित नहीं हो सकता।

प्रशिक्षण के दौरान इस बात पर जोर दिया गया कि जब तक बच्चे का शैक्षणिक विकास, सामाजिक दृष्टिकोण, भावनात्मक मज़बूती और व्यावहारिक व्यवहार एक साथ आगे नहीं बढ़ते, तब तक सच्चा विकास संभव नहीं है।

इस पूरे अभियान में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी 'SEEKH – Holistic Development' (सीख - समग्र विकास) को बनाया गया है। साथी फेलोज़ के लिए आयोजित विशेष प्रशिक्षण सत्र में यह बात प्रमुखता से उभरी कि बच्चों का विकास केवल किताबों के पन्ने पलटने तक सीमित नहीं हो सकता।

प्रशिक्षण के दौरान इस बात पर जोर दिया गया कि जब तक बच्चे का शैक्षणिक विकास, सामाजिक दृष्टिकोण, भावनात्मक मज़बूती और व्यावहारिक व्यवहार एक साथ आगे नहीं बढ़ते, तब तक सच्चा विकास संभव नहीं है।

- **शैक्षणिक और व्यावहारिक संतुलन:** खेल-खेल में सीखने की प्रक्रिया, तर्क क्षमता का विकास और नैतिक मूल्यों को दिनचर्या में शामिल करना।
- **भावनात्मक एवं सामाजिक सशक्तिकरण:** बच्चों में आत्मविश्वास जगाना, उन्हें अपने विचार व्यक्त करने का अवसर देना और समाज व पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी का अहसास कराना।
- **ABG इंडिकेटर्स से जुड़ाव:** होलिस्टिक डेवलपमेंट की हर एक गतिविधि को आदर्श बाल ग्राम के निर्धारित मानकों से सीधा जोड़ा गया है, जिससे यह मापा जा सके कि बच्चे के व्यवहार और ज्ञान में कितना सकारात्मक बदलाव आ रहा है।

धरातल पर बदलाव:
नए केंद्रों की तैयारी और समस्याओं का त्वरित समाधान

समग्र विकास के इस संदेश को गांव-गांव तक पहुँचाने के लिए आगामी माह से नए शिक्षा केंद्रों के संचालन की व्यापक तैयारियाँ पूरी कर ली गई हैं। इसके लिए पालकों और स्थानीय समुदाय से सीधा संपर्क साधा गया है ताकि बच्चों की नियमित उपस्थिति दर्ज हो सके।

वहीं, व्यवस्था को बेहतर बनाने की दिशा में एक संवेदनशील पहल भी देखने को मिली। 'सृजन गरिमा' कार्यक्रम के तहत संचालित एक पुराने केंद्र में आ रही व्यावहारिक समस्याओं को देखते हुए, स्थिति का त्वरित आकलन किया गया। बच्चों की पढ़ाई में कोई बाधा न आए, इसे ध्यान में रखते हुए पुराने केंद्र को बंद कर समुदाय की सहमति से नए और उपयुक्त स्थान पर नया शिक्षा केंद्र शुरू किया गया है।

नई कार्ययोजना और उपलब्धियाँ

बीते माह की प्रमुख उपलब्धियों में सभी कार्यप्रणालियों (SOP) और ABG इंडिकेटर्स की स्पष्ट समझ विकसित करना, साथी फेलोज़ को होलिस्टिक डेवलपमेंट पर कुशलतापूर्वक प्रशिक्षित करना और नए केंद्रों की रूपरेखा तैयार करना शामिल रहा।

आगामी माह का संकल्प:

आने वाले महीने में सभी संचालित एवं नए शिक्षा केंद्रों का सुचारु संचालन सुनिश्चित किया जाएगा। पालकों और समुदाय की सहभागिता को बढ़ाते हुए, ABG इंडिकेटर्स के आधार पर बच्चों के समग्र विकास (Holistic Development) की गतिविधियों को नियमित रूप से धरातल पर उतारा जाएगा, ताकि हर गांव सही मायनों में 'आदर्श बाल ग्राम' बनने की ओर कदम बढ़ा सके।

कंप्यूटर शिक्षा केंद्रों की नई शुरुआत:

उम्मीद और तकनीकी विकास का नया सवेरा

किसी भी नई पहल की सफलता के पीछे सही समन्वय और मजबूत इरादों की एक कहानी होती है। कंप्यूटर शिक्षा नोडल अधिकारी के रूप में यह जिम्मेदारी सिर्फ व्यवस्था संभालने की नहीं, बल्कि छात्रों तक तकनीक की पहुंच को आसान बनाने की एक महत्वपूर्ण मुहिम थी।

शिक्षा के इस नए सफर की शुरुआत हुई बंद पड़े कंप्यूटर केंद्रों को फिर से सक्रिय करने के लक्ष्य के साथ। पहला बड़ा पड़ाव था हर केंद्र में कंप्यूटर सिस्टम की स्थिति जांचना, उन्हें सही तरीके से स्थापित (Install) करना और यह सुनिश्चित करना कि हर एक सिस्टम सुचारू रूप से काम कर रहा है या नहीं।

एक साथ सभी केंद्रों को पूरी तरह तैयार करना एक बड़ी चुनौती थी, लेकिन निरंतर निगरानी और फॉलो-अप के जरिए इस काम को रफ्तार दी गई। जिन केंद्रों में मरम्मत (Repair) या नए सेटअप की जरूरत थी, वहां लगातार बातचीत और तकनीकी टीम के साथ समन्वय बनाकर काम आगे बढ़ाया गया।

मेहनत और सही रणनीति का असर जल्द ही दिखाई देने लगा। कुल 16 कंप्यूटर शिक्षा केंद्रों में से 10 केंद्र 1 जुलाई को पूरी तरह से क्रियाशील (Operational) हो गए। जैसे ही 1 जुलाई को इन 10 केंद्रों के दरवाजे खुले, कंप्यूटर लैब्स एक बार फिर छात्रों की उत्सुकता और कीबोर्ड की खटपट से गूंज उठे।

वहीं दूसरी ओर, बाकी बचे केंद्रों में भी मरम्मत और सेटअप का काम अंतिम चरणों में जारी है, ताकि जल्द से जल्द 100% केंद्रों को चालू करके हर बच्चे तक कंप्यूटर शिक्षा का लाभ पहुंचाया जा सके। यह सिर्फ एक प्रशासनिक अपडेट नहीं, बल्कि डिजिटल साक्षरता की दिशा में बढ़ाया गया एक मजबूत कदम है।

आदर्श बाल ग्राम की ओर बढ़ते कदम:

जून माह में निखरीं शिक्षा और समुदाय की नई उम्मीदें

जून का महीना शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव की एक नई बयार लेकर आया। 'आदर्श बाल ग्राम' (ABG) की परिकल्पना को धरातल पर उतारने के लिए इस पूरे महीने एक विशेष उत्साह और ऊर्जा देखने को मिली। इस पूरी पहल का मुख्य ध्येय बच्चों का सर्वांगीण विकास, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और स्कूल व समुदाय के बीच एक अटूट, मजबूत रिश्ता कायम करना था।

शैक्षणिक योजना और समीक्षा: मजबूत नींव की तैयारी

बदलाव की इस कहानी की शुरुआत हुई कक्षाओं के भीतर सीखने की प्रक्रिया को नया आकार देने से। सबसे पहले कक्षा 5 के 'लर्निंग आउटकम्स' (सिखने के प्रतिफल) पर गहन विचार-विमर्श किया गया।

बच्चों को केवल किताबी ज्ञान देने के बजाय, दक्षता आधारित 'लेसन प्लान' तैयार किए गए, ताकि शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावी, रोचक और परिणाम देने वाली बन सके।

इसके साथ ही, बच्चों के शुरुआती पढ़ाई के स्तर को मापने के लिए बेसलाइन प्रश्न-पत्रों (Baseline Question Paper) की बारीक समीक्षा की गई। इस आकलन से जो बातें और निष्कर्ष सामने आए, उन्हीं को आधार बनाकर आगे की पूरी शैक्षणिक योजना का ढांचा तैयार किया गया।

दिशा तय करते 'ABG इंडिकेटर्स'

प्रगति को सही दिशा में बनाए रखने के लिए ABG इंडिकेटर्स का विस्तृत पुनरावलोकन (Review) किया गया। जहाँ भी कमियाँ या सुधार की गुंजाइश दिखी, वहाँ आवश्यक संशोधन किए गए। इसके बाद एक नई और संशोधित कार्ययोजना तैयार कर पूरी टीम के साथ साझा की गई, ताकि हर सदस्य एक ही लक्ष्य के साथ आगे बढ़ सके।

31 इंटरवेंशन SOPs और क्षमता निर्माण की मास्टरक्लास

15 जून का दिन इस पूरे अभियान के लिए बेहद खास रहा। इस दिन से नोडल पर्सन द्वारा फेलोज़ के लिए एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस प्रशिक्षण का मुख्य केंद्र बिंदु ABG के 31 इंटरवेंशन SOPs थे।
इस सत्र के दौरान फेलोज़ को बहुत ही गहराई से मार्गदर्शन दिया गया:

- **स्पष्ट उद्देश्य:** प्रत्येक हस्तक्षेप (Intervention) के मुख्य उद्देश्यों को बारीकी से समझाया गया।
- **संकेतकों से जुड़ाव:** यह स्पष्ट किया गया कि ये हस्तक्षेप किस प्रकार ABG संकेतकों को हासिल करने में मदद करेंगे।
- **समुदाय स्तर पर क्रियान्वयन:** ज़मीनी यानी समुदाय स्तर पर इन रणनीतियों को प्रभावी ढंग से कैसे लागू किया जाए, इसका व्यावहारिक ढांचा पेश किया गया।
- **दीर्घकालिक प्रभाव:** इन सभी प्रयासों से बच्चों और पूरे गाँव के भविष्य पर लंबे समय में क्या सकारात्मक असर पड़ेगा, इस पर विस्तार से चर्चा हुई।

जून के इस पूरे महीने ने यह साबित कर दिया कि जब सही योजना, जमीनी समीक्षा और मजबूत प्रशिक्षण एक साथ मिलते हैं, तो 'आदर्श बाल ग्राम' का सपना सिर्फ एक सोच नहीं रहता, बल्कि बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की एक जीती-जागती हकीकत बन जाता है।

तैयारी से सफलता की ओर:

आगामी शैक्षणिक सत्र के लिए संगठन ने कसी कमर, जून माह में रची मजबूत कार्ययोजना की पटकथा

आगामी नए शैक्षणिक सत्र की शुरुआत को गुणवत्तापूर्ण और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से जून माह का पूरा समय व्यापक तैयारियों, क्षमता निर्माण और रणनीतिक योजना बनाने में समर्पित रहा। संगठन का मुख्य ध्येय लर्निंग रिसोर्स सेंटर (LRC) समेत अपने तमाम शैक्षणिक कार्यक्रमों (Interventions) का सुचारू और गुणवत्तापूर्ण संचालन सुनिश्चित करना था। इसके लिए स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर (SOP) की गहरी समझ विकसित करने से लेकर शिक्षकों, फेलो (Fellows) के चयन और समुदाय के साथ समन्वय स्थापित करने की दिशा में ठोस कदम उठाए गए।

1 लाइब्रेरी लेसन प्लान: विषयों का रचनात्मक एकीकरण

जून महीने में लर्निंग रिसोर्स सेंटर (LRC) के लिए एक विशेष विषय-आधारित लाइब्रेरी लेसन प्लान तैयार किया गया। इस योजना की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें लाइब्रेरी की गतिविधियों को केवल किताबों तक सीमित न रखकर हिन्दी, अंग्रेज़ी, गणित और पर्यावरण अध्ययन (EVS) के साथ जोड़ा गया है। बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने के साथ-साथ विषयगत समझ को मजबूत करने के लिए खेल, कहानियों, समूह चर्चा और रचनात्मक गतिविधियों को शामिल किया गया है।

2 परिमल सर के साथ रणनीतिक बैठकें

संगठन की कार्यप्रणाली और गुणवत्ता के मानकों को नए आयाम देने के लिए परिमल सर के साथ कई महत्वपूर्ण बैठकें हुईं। इन बैठकों में ABG स्ट्रक्चर, इंटरवेंशन फ्रेमवर्क, इंटीग्रेटर की भूमिका, ऑटोमेशन सिस्टम, मॉनिटरिंग एवं रिपोर्टिंग मैकेनिज्म तथा विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों के SOP पर गहराई से चर्चा की गई।

3 LRC शिक्षक SOP मॉड्यूल का विकास

सभी केंद्रों पर एक समान और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान की जा सके, इसके लिए LRC शिक्षकों के लिए एक विस्तृत SOP मॉड्यूल तैयार किया गया। इसमें दैनिक संचालन, बच्चों की उपस्थिति, सामुदायिक सहभागिता, दस्तावेजीकरण और रिपोर्टिंग प्रक्रिया को व्यवस्थित रूप दिया गया।

4 फेलोशिप और प्रशिक्षण की मजबूत रूपरेखा

नए फेलो (Fellows) के प्रभावी मार्गदर्शन के लिए एक विस्तृत प्रशिक्षण शेड्यूल (Training Schedule) तैयार किया गया, जिसमें ओरिएंटेशन से लेकर फील्ड वर्क और रिपोर्टिंग तक के सभी चरणों को शामिल किया गया। वहीं, 15 जून से 30 जून के दौरान आयोजित गहन SOP प्रशिक्षण सत्र में संगठन के सभी प्रमुख कार्यक्रमों—जैसे Seekh, Srijan, Peer Learning, Navodaya, NMMSE, STEP, Science Mela, Computer Education, Girls Rising, Garima Manch, SMC/SDMC, PTM और ECCE—की गुणवत्ता, मानक एवं कार्यप्रणाली का बारीकी से अध्ययन किया गया।

5 1 जुलाई से LRC खोलने की व्यापक तैयारी

1 जुलाई से लर्निंग रिसोर्स सेंटर्स के नियमित संचालन को लेकर एडमिन टीम और फेलोज के साथ क्लस्टर-वार बैठकें आयोजित की गईं। क्लस्टर के अनुसार आवश्यक संसाधनों और फेलो की जरूरतों की समीक्षा कर जानकारी साझा की गई, ताकि पहले ही दिन से केंद्र सुव्यवस्थित रूप से कार्य कर सकें।

6 मैदानी कार्य (Field Work) और मानव संसाधन की पहचान

शैक्षणिक गतिविधियों को धरातल पर उतारने के लिए विभिन्न गांवों का भ्रमण किया गया। ठाकुराइन टोला में विद्यालय के प्रधानाध्यापक, SMC सदस्यों और अभिभावकों के साथ बैठक कर स्थानीय शिक्षक का चयन किया गया। इसके अलावा सिकोला गांव में होम विजिट के जरिए Seekh, Srijan और Garima Fellows हेतु योग्य और उत्साही स्थानीय युवाओं की पहचान की गई।

7 बेसलाइन असेसमेंट (Baseline Assessment) की तैयारी

धमतरी क्लस्टर के फेलोज के साथ बैठक कर आगामी बेसलाइन असेसमेंट के टूल्स, स्कोरिंग पैटर्न और लर्निंग आउटकम्स की बारीकियों पर विस्तृत चर्चा की गई, जिससे बच्चों के मौजूदा सीखने के स्तर का सटीक मूल्यांकन किया जा सके।

परिणाम (Outcome)

जून माह में किए गए इन निरंतर प्रयासों से संगठन की रणनीतिक क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। विषय-आधारित योजना, प्रशिक्षित मानव संसाधन और समुदाय-प्रशासन के साथ बेहतर तालमेल ने जुलाई माह से शुरू हो रहे शैक्षणिक सत्र के लिए एक बेहद मजबूत आधारशिला रख दी है।

आगे की राह (Way Forward)

जुलाई माह में सभी लर्निंग रिसोर्स सेंटर्स का समयबद्ध संचालन शुरू किया जाएगा। नियमित मॉनिटरिंग, मेंटरिंग और लाइब्रेरी लेसन प्लान के प्रभावी क्रियान्वयन पर मुख्य ध्यान रहेगा। बेसलाइन असेसमेंट के नतीजों के आधार पर बच्चों की जरूरतों के अनुसार शैक्षणिक योजनाएं बनाई जाएंगी। इसके साथ ही रिक्त पदों पर भर्ती प्रक्रिया पूरी कर समुदाय, SMC और अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी से शिक्षा के स्तर में सकारात्मक और टिकाऊ बदलाव लाने का प्रयास जारी रहेगा।

विज्ञान मेला 2026-27:

बच्चों में वैज्ञानिक सोच और नवाचार जगाने के लिए तैयार हुआ 'मास्टर प्लान'

जून 2026: स्कूली बच्चों में वैज्ञानिक सोच, रचनात्मकता और समस्याओं को सुलझाने की क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से 'साइंस मेला' (Science Mela) के पूरे वर्ष का विस्तृत रोडमैप तैयार कर लिया गया है। जून माह में तैयार की गई इस व्यापक योजना के तहत स्थानीय संसाधन केंद्र (LRC) स्तर से लेकर क्लस्टर स्तर तक विज्ञान मेले के सफल आयोजन की रूपरेखा तय की गई है।

इस पहल का मुख्य उद्देश्य कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों को केवल किताबों तक सीमित न रखकर उन्हें 'अनुभवजन्य शिक्षा' (Experiential Learning) और 'करके सीखने' (Learning by Doing) का अवसर प्रदान करना है।

किताबी ज्ञान से परे: मॉडल से जीवन की समझ तक

अक्सर विज्ञान मेलों को केवल एक प्रतियोगिता के रूप में देखा जाता है, लेकिन इस नए एक्शन प्लान में इसे बच्चों की जिज्ञासा और समस्या-समाधान की भावना को बढ़ावा देने के एक माध्यम के रूप में तैयार किया गया है। योजना के अंतर्गत:

चार मुख्य विषयों का समावेश: भौतिक विज्ञान (Physics), रसायन विज्ञान (Chemistry), जीव विज्ञान (Biology) और भूगोल (Geography) से जुड़े कई कम लागत वाले (Low-cost) और गतिविधि-आधारित मॉडल्स को शामिल किया गया है।

गहरी समझ पर जोर: बच्चों को केवल मॉडल बनाना ही नहीं सिखाया जाएगा, बल्कि उन्हें मॉडल के पीछे छिपे वैज्ञानिक सिद्धांतों (Scientific Concepts), उनकी कार्यप्रणाली (Working Process) और दैनिक जीवन में उनके उपयोग (Real-life Applications) की गहन समझ भी दी जाएगी।

सर्वांगीण विकास: इस प्रक्रिया से बच्चों में मॉडल-मेकिंग, टीमवर्क (साथ मिलकर काम करना) और प्रस्तुतीकरण (Presentation Skills) का आत्मविश्वास विकसित होगा।

LRC से क्लस्टर स्तर तक का चरणबद्ध सफर

जून माह की योजना में आगामी महीनों के लिए एक स्पष्ट टाइमलाइन निर्धारित की गई है। इसके तहत:

1. LRC स्तर पर तैयारी:

बच्चे स्थानीय संसाधन केंद्रों (LRC) पर स्वयं मॉडल तैयार करेंगे, सीखेंगे और अपनी प्रस्तुतियों का अभ्यास करेंगे।

2.पारदर्शी चयन प्रक्रिया:

LRC स्तर पर बेहतर प्रदर्शन करने वाले मॉडल्स और बच्चों का चयन क्लस्टर लेवल साइंस मेला (Cluster Level Science Mela) के लिए किया जाएगा।

3. सामग्री और निगरानी:

पूरे वर्ष के लिए आवश्यक शिक्षण-सामग्री (TLM), मॉडल प्रिपरेशन गाइडलाइंस और मॉनिटरिंग सिस्टम का खाका तैयार कर लिया गया है।

फैलो और वॉलिंटियर्स निभाएंगे मेंटर्स की भूमिका

कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए फैलो (Fellows) और स्वयंसेवकों (Volunteers) को महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं। ये मेंटर्स मॉडल बनाने से लेकर मेले के आयोजन तक बच्चों को हर कदम पर मार्गदर्शन देंगे।

जून माह में बनी यह ठोस योजना आने वाले महीनों में बाल-वैज्ञानिकों की एक नई पौध तैयार करने के लिए एक मजबूत नींव साबित होगी।

प्रिय पाठकों,

जून 2026 का यह महीना 'संकल्प एक प्रयास' के लिए आगामी शैक्षणिक सत्र की मजबूत तैयारियों और रणनीतिक योजनाओं का प्रतीक रहा है। 'आदर्श बाल ग्राम' (ABG) मॉडल को धरातल पर उतारने के लिए कक्षा 5 के दक्षता-आधारित लेसन प्लान तैयार किए गए और ABG के 31 इंटरवेंशन SOPs पर फेलोज़ व नोडल अधिकारियों का गहन क्षमता-निर्माण किया गया।

इस माह हमारी प्रमुख पहलों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है:

STEM @ Your Doorstep , 5 जिलों के 250 गाँवों के 4,000+ विद्यार्थियों तक पहुँचने के लिए 50 फेलोज़ की तैनाती की गई। डिजिटल शिक्षा व ई-उड़ान: एनिमेटेड वीडियो और पिको प्रोजेक्टर्स के माध्यम से कक्षाओं को स्मार्ट बनाया जा रहा है। साथ ही, 1 जुलाई से 10 बंद पड़े कंप्यूटर केंद्रों को पुनः चालू कर दिया गया है।

हमारे सहयोगी संस्थाएं

Caring Friends
Helping Good NGOs Perform Better
MUMBAI

Arpan
FOUNDATION

DONATEKART

muktangan
learning & growing together

Asha
for Education
Bringing hope through education

phf Paul Hamlyn Foundation

INVOLVE
Building Tomorrow

अध्ययन
ADHYAYAN

सीख (SEEKH) व होलिस्टिक डेवलपमेंट: बच्चों के बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास के लिए विशेष गतिविधियाँ निर्धारित की गई। विज्ञान मेला 2026-27 'करके सीखने' के सिद्धांत पर आधारित वार्षिक रोडमैप तैयार किया गया, जो बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण जगाएगा।

1 जुलाई से सभी लर्निंग रिसोर्स सेंटर्स (LRC) के सुचारू संचालन के लिए शिक्षकों, SMC सदस्यों और समुदाय के साथ निरंतर बैठकें की जा रही हैं। चुनौतियों के बावजूद हमारी समर्पित टीम के अनवरत प्रयासों से हम हर बच्चे तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाने के लिए संकल्पबद्ध हैं।

सस्नेह,

परिमल सिन्हा,
संस्थापक- संकल्प एक प्रयास

SANKALP
Empowering Dreams, Building Future

SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI

Sankalp ek prayas, Virat Nagar, Utai, Durg (C.G.)
Email : sankalpekprayas@gmail | Web : www.sankalpekprayas.org

Follow us on : @SankalpEkPrayas-s4i @SANKALPEK_PRAYAS